Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 7, July - 2025

DOIs:10.2018/SS/202507013 --:-- Research Paper / Article / Review

अस्तित्व के लिए जीवनपर्यंत जद्दोजहद 'पन्ना बा' और 'बिंदा महराज' कहानियों में

डॉ. रम्या राज आर
सहायक प्राचार्या, फातिम माता नैशनल कॉलेज (स्वायत्त), कोल्लम, केरल।
ई-मेल: 88remyaraj@gmail.com

शोध सार:- धरती पर हर जीव का जीने का हक है। अपनी जन्म-जात विशेषताओं से LGBTQAI+ समाज इसके लिए हमेशा लड़ता रहता है। यहाँ मानवाधिकार की समस्या सबसे सशक्त रूप में सामने आती है। थर्ड जेंडर के लोगों के प्रति मुख्यधारा का दृष्टिकोण अब भी वैसा है जैसा 74 साल के पहले था। इनकी ज़िंदगी सांस्कृतिक स्तर के हिसाब से ऊँचे स्तर का गर्व करने वाले सभ्य समाज की सांस्कृतिक गिरावटों का परिचायक है। हिंदी कथा साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श के अनेक आयाम देख सकते हैं। क्वीर समाज को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानियों में प्रथम चरण की कहानी है शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'बिंदा महराज'। गरिमा संजय दूबे की कहानी 'पन्ना बा' भी ऐसी कहानी है। इन दोनों कहानियों के माध्यम से दो पात्रों के आंतरिक उलझनों एवं एकांत जीवन से गुज़रते हैं। क्वीर समाज के प्रति मुख्यधारा के समाज के दृष्टिकोण पर चर्चा करना शोध प्रबंध का लक्ष्य है।

बीज शब्द:- थर्ड जेंडर, क्वीर, अस्तित्व, अस्मिता, किन्नर, हिजड़ा, साहित्य, मानवाधिकार।

मूल आलेख:- आजकल इंसानियत की चर्चा ज़्यादातर चल रही है। यह इसकी गवाही देती है कि समाज इस अनुभूति से पीछे हट गया है। आखिरकार आदिम काल की जीवन-यापन की प्रवृत्तियाँ कभी पीछा नहीं छोड़तीं। यानि कि दूसरों पर अतिक्रमण करके अपना शिकार पाने की आदत आज भी मानव के दिमाग में कार्यरत है। किंतु इसकी विशेषता यह थी कि वह सिर्फ अपनी प्राथमिक ज़रूरतों की पूर्ति हेतु थी। ज़माना बदलने के साथ संस्कृति की आड़ में मानव खुद ही पशु से भी बदत्तर होता जा रहा है, अर्थात् संस्कृति वहाँ तक नहीं पहुँची है जहाँ उसे पहुँचना था। मानव के बीच में ही जो नफ़रत का भाव दिखाई देता है जिसके पीछे मनुष्यत्व की कमी या समानुभूति का अभाव ही है। उस मुद्दे पर मानवाधिकार पर प्रश्न चिह्न डाला जा रहा है।

थर्ड जेंडर के लोग अपने अस्तित्व की स्थापना के लिए, अस्मिता के लिए जीवन भर संघर्षों से गुज़रने को अभिशप्त हैं। जबसे लेकर उन्हें अपनी पहचान का अनुभव होता है, उस दिन से उनका संघर्ष का भी शुरूआत होता है। पहले खुद को और बाद में परिवार को और फिर समाज को अपनी अस्मिता से परिचित कराते वक्त उन्हें बहुत सारी विडंबनाओं से गुज़रना पड़ता है। हाशिएकृत वर्गों के प्रति बहुमत के तिरस्कार की भावना सभ्य समाज के शुरूआती दौर से ही हावी है। क्वीर समाज ऐसे तिरस्कृत समाज की हरकतों से उत्पीड़ित जीने को अभिशप्त है। हाल ही में, उन्होंने अपने अस्तित्व की स्थापना कानूनी तौर पर हासिल किया है। लंबी अवधी के संघर्षों के बावजूद उनका यह विजय सराहनीय है। क्वीर समाज की समस्याएँ उनके जीवन के हर पहलू में, हर काल में, हर पल में अंतर्निहित है जिनसे गुज़रना उनके लिए जीवन जीना है। "एकाधिक नामों यथा - हिजड़ा, किन्नर, कोज्जा, खोजवां हिजड़, माद्दा, नंगाई, अरुवन्नी, खुसरा, पवैया, मंगलमुखी इत्यादि से पहचाना जानेवाला यह समाज अनंत दुःखों एवं करुण अनुभवों को अपने आपमें

समेटे हुए इस निर्दयी समाज से निरंतर संघर्षरत है।"[1] ज़ाहिर है कि जीवनपर्यंत संघर्षों से जूझकर जीवन की अंतिम दशा में भी चैन का आभास न मिलना उनके लिए अनुभूत सच्चाई है। विभिन्न प्रांतों में जीनेवाले क्वीर समाज के सम्मुख जो चुनौतियाँ हैं उनमें समानताएँ हैं। विस्थापन, अकेलेपन, सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक पहचान, असमानता आदि अनेक आयामों पर वे संघर्षरत हैं। "किन्नर होना या ना होना यह किसी के बस की बात नहीं लेकिन हम और हमारा समाज ईश्वर द्वारा दिये गये उस रूप को नकारते हुये सारी जिम्मेदारी उस देह पर डाल देते हैं जिसका जन्म ना पुरुष के रूप में हुआ है न स्त्री के रूप में और यही से शुरू होता है समाज में अपना अस्तित्व तलाशते किन्नर की गाथा, जो मानों चीख चीख कर कहती है इस अधूरेपन में भी हमारी दास्ताँ मुकम्मल है।"[2] बेचैन और दर्दनाक रास्ते से चलने को विवश क्वीर समाज के हर व्यक्ति का जीवन इस सभ्य समाज का हिस्सा होने या न होने की विडंबना झेलते हुए भी ज़ोर-ज़ोर से अपनी उपस्थिति घोषित कर रहा है, जहाँ तक साध्य हो वहाँ तक।

साहित्यकार की सफलता तब होती है जब वे समाज के सबसे प्रताड़ित, शोषित, हाशिएकृत व्यक्ति के विचारों-पीड़ाओं को शब्दों की लड़ी में गूँथकर पाठकों के सम्मुख रख देता है। हिंदी कहानीकारों ने अपने-अपने ढंग से क्वीर समाज की चुनौतियों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। यहीं थर्ड जेंडर विमर्श उभरकर आता है। क्वीर समाज को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानियों में प्रथम चरण की कहानी है 'बिंदा महराज'। इसका पात्र 'बिंदा महराज' कहानी के शुरूआत में ही अपनी जन्मजात शारीरिक तकलीफ़ों का पर्दाफाश करके बुनियादी समस्या के द्वार खोलने का प्रयास करता है: "कितना अजीब रूप है। हाथ-भर के लंबे-लंबे बाल पसीने और तेल से लटिया गये हैं, सिर पर बीचोंबीच उसकी माँग का कृत्रिम सिंदूर ऐसा उदास मालूम होता है कि जैसे जेठ के दिनों में मरे हुए इंद्रगोप के कीड़ों की पाँत हो। मूँछ-दाढ़ी के बाल भीगी बिल्ली की छाती के भभरे रोयें की तरह खड़े हो गये हैं। उसकी नाक में पीतल की लवंग थी, आँखों के पास कजराई उतर आयी थी, ... अपने इस विचित्र रूप को देखकर बिंदा महराज के होंठों पर बेमानी हँसी छा गयी और उसकी आँखें विरूपता के आभास से बदरंग लगने लगीं।"[3] कई दिनों की बीमारी के बाद आईने के सामने बिंदा महराज को खुद ही बेढंग लगता है। बीमारी के कारण औरत के शक्ल में दिखने के लिए जो कुछ वह करता था वह नहीं कर सका। यानि कि क्वीर समाज का हर व्यक्ति अपने शारीरिक अस्तित्व को बनाए रखने के लिए स्वयं अपने शरीर से ही जीवन भर संघर्षरत है। किशोरावस्था के दौरान जब स्व-पहचान का उन्हें अनुभव होता है, तब से अपनी लड़ाई का आभास भी उन्हें मिलता है। जीवन के इस मोड़ से लेकर वे खुद को इसके लिए तैयार कर रखते हैं। इन खासियतों के सम्मुख जीवन के प्रारंभिक दौर में वे अचंभे रह गये होंगे जहाँ से उनके संघर्ष का सफ़र शुरू होता है, फिर जीवन से लड़ने की ऊर्जा प्राप्त होती है।

कहानी में जिन व्यक्तियों से बिंदा महराज भाई के समान, पुत्र के समान वात्सल्य रखता है, वे सब उससे दूर चला जाता है। कहानी का एक पात्र 'घुरविनवा' का कथन "'मैं तुमसे परेम करता हूँ, बिन्दो रानी'। घुरविनवा ने आज मर्म पर बान मारा था।"[4] यह वाक्य उसे पुरानी यादों की ओर ले जाता है जहाँ करीमा, दीपू मिसिर और उसका बच्चा आदि की यादें अब भी ताज़ी थीं। अपनी युवावस्था में जब वह गाँव की गलियों में बहुत ही खुशी बिखराती चलती तो उसके साथ अपने चचेरे भाई का लड़का करीमा ढोलक लेकर चलता। बिंदा महराज को वह प्राणों से ज़्यादा प्रिय था। एक दिन करीमा भी उसे दर्दनाक अपमान देकर चला गया। वह इस प्रकार सोचता है- "'हिजड़ा!' उस दिन बाप के कहे शब्दों को करीमा दोहराने लगा, 'मैं तेरे साथ शोहदा नहीं बनूँगा'। बिंदा महराज आहत अभिमान का बोझा उठाये खड़ा था। उसकी अपलक आँखें जड़ित शीशे की तरह गतिहीन, धूमिल। उसे विश्वास कैसे होता कि ये शब्द करीमा के हैं। बड़ा स्नेह वंचित था मन में, जो आँखों में उतर आया।"[5] अपने परिवार से शुरू होती आत्मसम्मान की लड़ाई जिससे परिवार से बाहर आकर भी उसे जूझना पड़ता है। अपने मन की ममता, प्रेम आदि कोमल भावों को वह दूसरों के सम्मुख प्रदर्शित न

करके उपेक्षित जीवन का कड़वीपन भोगता है। यहाँ एकांत जीवन बिताने को विवश बिंदा महराज प्रेम और अपनत्व से वंचित क्वीर समाज का प्रतिनिधित्व करता है।

बिंदा महराज अपना गाँव छोड़कर ठाकुरों के गाँव में चला गया। वहाँ दीपू मिसिर और बिंदा हिजड़े की मुहब्बत की चर्चा फैली तो वह सोचने लगा कि क्या यह संभव है। फिर खुद ही समझाया कि यह एक प्रवंचना है और पहचान ली कि उसका प्यार दीपू मिसिर के दो-ढाई बरस का छोटा-सा बच्चा मुन्ना से है। एक दिन मुन्ना को न देखकर वह परेशान हुआ, फिर पता चला कि मुन्ना बीमार है। "महराज के चेहरे पर शाम उतर आयी। वह चुपचाप गाँव से बाहर निकलकर काली जी के मंदिर तक गया और उसने चौखट पर सिर पटक दिया। ज़िदगी में पहली बार उसे कोई इच्छा लेकर देवता के पास आना पड़ा था।"[6] इन शब्दों से ही ज्ञात होता है कि बिंदा महराज किस हद तक निर्लिप्त जीवन बिता रहा था। परंतु वह मुन्ना को देख लेने की इच्छा संभल न पाया। वह दीपू मिसिर का घर गया, लेकिन मिसराइन ने दरवाज़ा बंद कर लिया। मुन्ना की मृत्यु हुई तो बिंदा महराज सह न पाया, बच्चे को देखने के लिए जा भी न पाया। किंतु ये शब्द उसके कान तक आ पड़े- "'डायन' औरत की आवाज़ नागिन की सिसकारी की तरह काँपती हुई सुनाई पड़ती, लड़के को छाती से लगा लिया था। बिंदा महराज कलेजे के दर्द को मुट्ठियों में पकड़ने की कोशिश कर रहा था।"[7] उसके बाद उसे जो बुखार हो गया था वह अनंत था... स्नेह से प्रवंचित आत्मा का बुखार, आत्मसम्मान पर मार खाए मन का बुखार आसानी से हटता नहीं। कहानीकार खुद ही 'बिंदा महराज' के संबंध में व्यक्त करते हैं – "बिंदा महराज जैसे पात्र तो हर जगह आते-जाते हुए दिखाई पड़ते रहते हैं... इस कहानी में बिंदा महराज की जो पीड़ा उभरी है, वह किसी एक व्यक्ति में नहीं देखी गयी, बल्कि सिचुएशन्स के द्वारा क्रिएट की गई है। इस चरित्र के माध्यम से, मैं उस उपेक्षित जीवन को भी एक मूल्य देना चाहता था, जिसके अंदर पीड़ा का बोध, मानवीय पीड़ा को भी लाँघ जाता है। जो पुरुष नहीं दे पाता, नारी नहीं दे पाती, वह एक हिजड़ा दे जाता है।"[8] एक चरित्र की सृष्टि अपने आसपास के जीवनों की प्रेरणा से होती है। अर्थात् जब कभी अनुभवों के उत्पीड़न से रचनाकार तड़पता है, तभी ऐसे पात्रों की सृष्टि होती है। बिंदा महराज के जीवन के संत्रास में थर्ड जेंडर समाज के अनेक मनुष्यों की संवेदनाओं की झलक है। अपने परिवार के सदस्यों के आत्मसम्मान की रक्षा हेतु इन लोगों को अपनों के बीच से पलायन करना पड़ता है, जहाँ उन्हें अजनबीपन और अकेलेपन की ज़िंदगी बितानी पड़ती है।

गरिमा संजय दूबे की 'पन्ना बा' कहानी 'पन्ना बा' के माध्यम से आदि से अंत तक एक किन्नर के जीवन के मार्मिक प्रसंगों को जोड़कर सामने आयी है। कहानी की आठ साल की 'गोटी' पूछती है- "मम्मी यह पन्ना बा अजीब है ना, बहुरुपिये की तरह।"[9] असल में क्वीर समाज अपने बहुरुपियेपन के अस्तित्व की स्थापना के लिए संघर्ष करते हैं। स्त्री और पुरुष जाति के अलावा अलग रास्ते से जीवन बिताने वाले एक समाज अपनी मौलिक ज़रूरतों की पूर्ति के लिए कानून की मदद की इंतज़ार में है। पन्ना बा सिर्फ़ दुआ माँगने वाले और भीख माँगने वाले के रूप में गोटी के सामने आता है। गोटी बचपन से ही पन्ना बा को एक बहुरुपिया किन्नर समझती है। किंतु जब गोटी का बेटा, अथर्व को देखता है तब उसके प्रति पन्ना बा की आत्मीयता ज़ाहिर होती है। वह जेब से पैसा लेकर बच्चे को देता है। आशीर्वाद देते वक्त उसकी आँखों से आँसू बहते हैं। "पहली बार किसी किन्नर को किसी को पैसे देता देखा माँ ने घर आकर साड़ी सेट, मिठाई और कुछ रुपए रख कर उसका घर भिजवा दिए, लेकिन हम दुखी हो गए थे। इधर फेसबुक पर किन्नर की मौत पर उसकी लाश की जूतों से पिटाई की खबर पढ़ ही रही थी कि पता चला पन्ना बा मर गया।"[10] आखिर उनका जीवन-यापन (सब्जी, किराने आदि सब कुछ) कुछ कहावतों और 'किन्नर की दुआ की कोई होड़ नहीं और उसकी बद्दुआ का कोई तोड़ नहीं' पर आधारित है। जीवन भर के संघर्ष के बाद मृत्यु भी उसे बचा नहीं पाती। जीवन भर के अपमान का शेष अब भी झेलना पड़ता है। कितना दर्दनाक है। पन्ना बा की मृत्यु पर गोटी की सोच इस प्रकार है- "वह मर गया, मेरा मन दुःख और क्रोध से जल रहा था। मृत्यु स्वाभाविक

दुःख देती है और क्रोध इसलिए कि मैं भी चाहती थी कि उसकी लाश पर जूते बरसा कर मैं भी उसे इस किन्नर के जन्म पर धिक्कारूँ और शायद वह मेरे जूतों की बौछार से डर कर अगले जनम में किन्नर के रूप में पैदा होने की हिमाकत ना करे।"[11] यहाँ एक किन्नर की मृत्युपर्यंत अवस्था की ओर कहानीकार का ज़िक्र है कि वाकई जीवित रहने पर लोग उनपर आँखों से, शब्दों से जितने भी जूते फेंकते थे, उतना ही मरने के बाद भी उन्हें भोगना पड़ता है।

निष्कर्ष:- थर्ड जेंडर विमर्श की धारा अब हिंदी साहित्य जगत् में जीवंत गति से विद्यमान है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य LGBTQAI+ समाज की संवेदनाओं को अपनाने के लिए कोशिश कर रहा है। कहानियाँ अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति भी होती हैं। कभी-कभी सत्य से कुछ कदम आगे सोचना पड़ता है। क्वीर समाज अपनी जैविक विशेषताओं को अपनी पहचान स्वीकारते हैं। अस्तित्व की स्थापना उनके लिए बुनियादी चुनौती है। विभिन्न उप-विभागों का क्वीर समाज अब आत्मसम्मान प्राप्त करने की लड़ाई में अग्रसर है। समाज में एक व्यक्ति की हैसियत से उनके अधिकारों का आदर करना मुख्यधारा के समाज का दायित्व है।

यहाँ सिर्फ दो कहानियों पर ही चर्चा की है। शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'बिंदा महराज' का पात्र बिंदा महराज एक हिजड़ा है जो उपेक्षित और संतप्त जीवन बिताती है, क्योंकि अपनों के अभाव से वह तड़पती है, आत्मपीड़ा महसूस करती है। अपने मन की कोमल भावनाओं से वह खुद ही दूर रहती है। इसका कारण यह होगा कि वह सोचती है कि क्या मैं इसका लायक हूँ। दूसरी कहानी गरिमा संजय दूबे की 'पन्ना बा' एक किन्नर के आत्मव्यापारों से गुज़रती है, जिसमें गोटी नामक लड़की के ज़रिए पन्ना बा नामक किन्नर की मानसिक व्यथाओं से पाठक जूझता है। गोटी मुख्यधारा के समाज की प्रतिनिधि है जो दूसरों के सम्मुख हाथ बँटाता है। कहानी में गोटी के बेटे के प्रति पन्ना बा के आत्मीय भाव की अभिव्यक्ति सिर्फ कुछ आँसू के सहारे ही प्रकट होता है। किंतु अंत में गोटी पहचानती है कि वे आँसू उसके तमाम जीवन थर्ड जेंडर के जीवन पर आधारित अनेक कहानियाँ हैं। परंतु उनकी स्वानुभूत जीवन-गाथाओं की रचनाओं से प्रेरणा की ज़रूरत है। उनके सामाजिक पहचान और सामाजिक स्वीकृति के लिए कार्य अब भी बाकी है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य इस दिशा में अग्रसर है।

संदर्भ:

1. कथा और किन्नर, संपादकः डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, भूमिका से।
2. हिंदी उपन्यासों में थर्ड जेंडर विमर्श, डॉ रीना सिंह, शोध मंथन।
https://anubooks.com/uploads/session_pdf/166297609532.pdf
3. थर्ड जेण्डर चर्चित कहानियाँ, संपादकः डॉ. विमल ग्यानोबाराव सूर्यवंशी, रोशनी पब्लिकेशन्स, कानपुर, पृ.सं.9.
4. वही, पृ.सं.11.
5. वही, पृ.सं.14.
6. वही, पृ.सं.16.
7. वही, पृ.सं.16.
8. मेरे साक्षात्कार, शिवप्रसाद सिंह, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ संख्या 51.
9. थर्ड जेण्डर चर्चित कहानियाँ, संपादकः डॉ. विमल ग्यानोबाराव सूर्यवंशी, , रोशनी पब्लिकेशन्स, कानपुर, पृ.सं.71.
10. वही, पृ.सं.71.
11. वही, पृ.सं.74.